गुण :- 1. इसमें छात्र तथा शिक्षक दोनों सक्रिय रहते हैं।
2. यह विधि रुचिपूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक है।
3. इस विधि के द्वारा छात्रों में तर्क व चिंतन शक्ति का विकास किया जा सकता है।
4. कक्षा में अनुशासन की समस्या हल हो जाती है।

दोष :- 1. प्रश्नों की बनावट भ्रम की स्थिती उत्पन्न कर सकती है।
2. छात्रों में प्रश्नों के उत्तर के बारे में अनुमान लगाने की आदत का विकास होता है।
3. शिक्षण के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती।

सुझाव :- 1. प्रश्नों की भाषा सरल एवं प्रवाहमय होनी चाहिए।
2. पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित ही प्रश्न पूछे जाने चाहिए।
3. प्रश्नों का वितरण सम्पूर्ण कक्षा में समान रूप से होना चाहिए।
4. प्रश्नों का निर्माण कक्षा के स्तर को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

(ii) Heuristic or Heuristic Strategy :-
[अन्वेषण विधि]

इस विधि के जन्मदाता प्रो० एच० ई० अर्मस्ट्रांग थे। इस विधि को अनुसंधान विधि की "स्वयं ज्ञान विधि" के नाम से भी जाना जाता है। सर्वप्रथम इस विधि का प्रयोग भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में किया गया। परन्तु बाद में इसकी उपयोगिता को देखते हुए अन्य विषयों में भी इसका प्रयोग किया जाने लगा।

Heuristic शब्द ग्रीक भाषा के Heuriskein से लिया गया है जिसका अर्थ है "मैं स्वयं खोज करता हूँ" [I Discover / I find out myself] अर्थात् यह विधि स्वयं खोज करने या अपने आप सीखने की विधि है।

Structure :- इस विधि में छात्र को एक अन्वेषक के स्थिती में रखा जाता है। अध्यापक केवल छात्रों के समक्ष विषयवस्तु से सम्बन्धित समस्याएं रखता है, जिन्हें छात्र पुस्तकों

A Quality Product from Chitra

तथा यंत्रों की सहायता से स्वयं के प्रयत्नों द्वारा ग्रहण करता है। आवश्यकता पड़ने पर छात्र शिक्षकों से परामर्श कर सकते है प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से सोचने तथा अपने अनुसार समस्या पर कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। छात्र समस्या के तथ्यों का विश्लेषण करके उससे सम्बन्धित उत्तरों को ढूंढते है। इस विधि में Learning by doing तथा Practice makes a man perfect के शिक्षण सूत्रों का प्रयोग किया जाता है

गुण:- 1. इस विधि में छात्र ज्ञान को सक्रिय रूप में ग्रहण करता है।
2. छात्रों में आत्म निर्भरता का विकास होता है।
3. छात्रों में तार्किक तथा चिंतन शक्ति का विकास होता है।

दोष:- 1. प्राथमिक कक्षाओं में इस विधि का प्रयोग असम्भव है।
2. अच्छे शिक्षकों का अभाव।
3. सम्पूर्ण पाठ्य वस्तु को इस विधि के द्वारा नहीं पढ़ाया जा सकता
4. इस विधि का प्रयोग सभी छात्रों के लिए असम्भव है।
5. सभी विद्यार्थियों के लिए सहायक सामग्री उपलब्ध कराना असम्भव कार्य है।

सुझाव:-1. छात्रों के स्तर के अनुरूप ही Topic की व्यवस्था की जाये।
2. योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों की व्यवस्था की जाये।
3. इस विधि का प्रयोग करते समय सभी विद्यार्थियों के लिए विषय वस्तु से सम्बन्धित सहायक सामग्री की व्यवस्था की जाये।

A Quality Product from Chitra